कुरुक्षेत्र का सारांश (जुलाई 2026)

1. राष्ट्रीय एकता के साधन के रूप में सांस्कृतिक विविधता

परिचय

भारत की सांस्कृतिक विविधता ग्रामीण परंपराओं, त्योहारों, जनजातीय प्रथाओं, कला, पर्यटन और डिजिटल आदान-प्रदान को राष्ट्रीय एकता से जोड़ती है। यह शहरीकरण, मीडिया के एकीकरण, आजीविका संबंधी संकट और जलवायु संबंधी जोखिमों का सामना करते हुए सामाजिक सामंजस्य को मजबूत करती है।

लोक परंपराएँ, मेले एवं साझा सामाजिक स्थल

- त्योहारों से जाति-वर्ग विभाजनों से परे समाजीकरण, उत्सव को सामूहिक भागीदारी और एकीकरण में बदलने की प्रेरणा मिलती है।
- पुष्कर, कुंभ, सोनपुर और भगोरिया मेले विभिन्न क्षेत्रों के तीर्थयात्रियों, व्यापारियों, कारीगरों और पर्यटकों को आपस में जोड़ते हैं।
- पुष्कर में सात दिनों तक औसतन 5 लाख लोग प्रतिदिन आए तथा सोनपुर में 15 दिनों तक 1.67-2 लाख लोग प्रतिदिन आए।
- प्रयागराज 2025 के महाकुंभ में 45 दिनों में लगभग 66 करोड़ लोग शामिल हुए, जिनका औसत प्रतिदिन 147 लाख लोगों का आगमन रहा।
- पंडवानी, विल्लु पाट्टू, ढाढ़ी जत्था और छऊ धार्मिक, ऐतिहासिक और नैतिक मूल्यों को प्रसारित करते हैं।
- इकत, ढोकरा, वारली चित्रकला और बाउल संगीत सांस्कृतिक संपदा और राष्ट्रीय पहचान को संरक्षित करते हैं।

Table 1: - Participation and Footfall in Major Indian Fairs

Sl No	Fair/ Mela	People Participated	Duration	Avg. Footfall per Day
1	Pushkar	35 lakh	7 Days	5 lakh
2	Kumbh	6600 lakh	45 Days	146.67 lakh
3	Sonepur	25–30 lakh	15 Days	1.67–2 lakh

Source: - PIB, Times of India, Rail.com

जनजातीय, मौखिक और कलात्मक सेतु

- भारत की 705 अनुसूचित जनजातियाँ (ST), जो जनसंख्या का 8.6% हैं, आनुष्ठानिक स्वशासन के माध्यम से पारिस्थितिक परंपराओं को संरक्षित करती हैं।
- गोंड कला, वारली पेंटिंग, भील नृत्य और संथाली संगीत मध्य प्रदेश-महाराष्ट्र-गुजरात-झारखंड में वैश्विक दृष्टिकोण व्यक्त करते हैं।
- उराँव, मुंडा और हो के सरहुल वन, जंगलों, पर्यावरण और जीवन को जोड़ने वाले साल/सखुआ की पूजा करते हैं।
- यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त छऊ, रामायण-महाभारत-पुराण कथाओं के माध्यम से ओडिशा, झारखंड और पश्चिम बंगाल को जोड़ता है।
- भागवत तुंगी, पंडवानी, विल्लु पाट्टू और ढाढ़ी जत्था मौखिक धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृति को संरक्षित करते हैं।
- मधुबनी, फुलकारी, वारली और ढोकरा पेंटिंग पारिस्थितिकी को कूटबद्ध करते हैं तथा बाउल संगीत हिंदू वैष्णववाद, सूफी इस्लाम, बौद्ध सहजिया का मिश्रण है।

नीतिगत समर्थन, आदान-प्रदान और समकालीन तनाव

- फिरन, जादोह, जशपुर होमस्टे, बेलगड़िया पैलेस और किन्नौर की 5000 साल पुरानी रावलीन परंपरा का आदान-प्रदान का विस्तार करती है।
- पाँचवीं-छठी अनुसूचियाँ, वन अधिकार अधिनियम, 2006 और अनुसूचित क्षेत्रों में पंचायत विस्तार अधिनियम, 1996 ग्राम सभाओं को सशक्त बनाते हैं।
- मंत्रालय के कार्यक्रम 705 अनुसूचित जातियों और 75 विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों को कवर करते हैं तथा लुप्तप्राय-भाषा योजना भाषाओं की रक्षा करती हैं।
- जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान 2023, जनजातीय अनुसंधान संस्थान, जनजाति विकास मिशन और वन धन आजीविका का समर्थन करते हैं।
- सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन 2017 संपत्तियों का मानचित्रण करता है तथा संगीत नाटक अकादमी ने 30,000 से अधिक कलाकारों को सहयोग प्रदान किया।
- भाषा गणना, 2011 के अनुसार 250 भाषाएँ लुप्त हो गई, जबकि राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन के अनुसार 40% बुनकरों की बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं हो पाती हैं।

निष्कर्ष

एल्गोरिदम-आधारित मीडिया, शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न तनाव के लिए स्थानीय भाषा की शिक्षा, निष्पक्ष बाजार, सामाजिक सुरक्षा, बौद्धिक संपदा संरक्षण और जीवित कानूनों की मान्यता आवश्यक है। हॉर्नबिल, रघुराजपुर के पट्टाचित्र संग्रह और एकलव्य फाउंडेशन जैसे सामुदायिक मंच यह दर्शाते हैं कि संस्कृति जीवंत, स्थानीय और एकीकृत बनी रह सकती है।

2. परंपरा के सूत्र : ग्रामीण शिल्प, वैश्विक गौरव

परिचय

भारत की हथकरघा और हस्तशिल्प परंपराएँ आजीविका, सांस्कृतिक स्मृति, क्षेत्रीय पहचान और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को बनाए रखती हैं। इनका अस्तित्व निष्पक्ष बाजारों, संस्थागत समर्थन, कारीगरों के सम्मान और नकल से सुरक्षा पर निर्भर करता है।

शिल्प अर्थव्यवस्था, कार्यबल और क्षेत्रीय पारिस्थितिकी

- भारत में उत्तर प्रदेश, राजस्थान, असम, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु सहित 64 लाख पंजीकृत बुनकर-कारीगर हैं।
- अगस्त 2025 तक, कुल हथकरघा बुनकरों में 71% और कुल कारीगरों में 64% महिलाएँ थीं।
- श्पहचानश कारीगर पहचान कार्यक्रम ने 2024 तक 32 लाख से ज़्यादा कारीगरों को रजिस्टर किया, जिससे उन्हें आधिकारिक पहचान मिली।
- टेक्सटाइल और कपड़ों के उद्योग में सीधे तौर पर 4.5 करोड़ से ज़्यादा लोग काम करते हैं तथा यह कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा रोजगार देने वाला क्षेत्र है।
- पश्मीना, ढोकरा, गोंड पिगमेंट और दक्षिणी कपास दिखाते हैं कि कैसे पर्यावरण पारंपरिक शिल्प कौशल को आकार देता है।
- रघुराजपुर, पोचमपल्ली, चंदेरी, कोंडापल्ली व बिष्णुपुर गाँव-केंद्रित शिल्प अर्थव्यवस्थाओं के उदाहरण हैं।

सांस्कृतिक मूल्य, बाजार और सामुदायिक मंच

- ओडिशा पट्टचित्र, पिपली, संबलपुरी, कोटपाड, बोमकाई, तारकशी, ओडिसी और मयूरभंज छाऊ जैसी कलाओं को संजोए हुए है।
- पश्चिम बंगाल कांथा, बिष्णुपुर टेराकोटा, बालूचरी, पटुआ स्क्रॉल और बाउल संगीत को बनाए हुए है।
- 2023-24 में हस्तशिल्प का निर्यात 32,758 करोड़ रुपये तक पहुँच गया, जो ग्रामीण शिल्प की वैश्विक माँग को दर्शाता है।
- टेक्सटाइल-कपड़ा उद्योग का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में 2% और भारत के निर्यात में 8.63% योगदान रहा।
- दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) ने 10 करोड़ महिलाओं को 90 लाख स्वयं-सहायता समूहों (SHGs) से जोड़ा।
- स्वयं सहायता समूहों को 12 लाख करोड़ रुपये का ऋण प्राप्त हुआ तथा eSARAS, ASOMI, PALASH, UMEED ने बाजारों का विस्तार किया।

नीतिगत समर्थन, चुनौतियाँ और आगे की राह

- भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग उत्पत्ति, प्रक्रिया और विरासत की रक्षा करते हैं, साथ ही भारत ने 2026 की शुरुआत तक 650 से अधिक टैग पंजीकृत कर लिए हैं।
- GeM, ट्राइब्स इंडिया, अमेजन कारीगर और फ्लिपकार्ट समर्थ कारीगरों को बिचौलियों के बिना सीधे बाजार तक पहुँचने में मदद करते हैं।
- राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम (NHDP) और व्यापक हस्तशिल्प क्लस्टर विकास योजना कौशल से लेकर निर्यात तक के पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करते हैं।
- एक जिला एक उत्पाद (ODOP), शिल्प गुरु पुरस्कार और कला दीक्षा पहचान, मान्यता और कला के हस्तांतरण को बढ़ावा देते हैं।
- मशीन कॉपी, कमजोर बुनियादी ढाँचा, कागजी कार्रवाई से भरा ऋण, अज्ञात हथकरघा चिह्न और प्रवासन कारीगरों को कमजोर करते हैं।
- जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक रंगों, कपास की किस्मों और बांस का क्षय हो रहा है, जिससे हस्तशिल्प सामग्री के आधार को खतरा पैदा हो रहा है।

निष्कर्ष

कारीगरों को उचित मजदूरी, सुलभ ऋण, लागू करने योग्य भौगोलिक सुरक्षा, बाजार तक पहुँच और सम्मानजनक पहचान की आवश्यकता है। शिल्प पुनरुद्धार से भारत की बहुल सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करते हुए ग्रामीण कौशल को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाए रखना आवश्यक है।

3. जनजातीय समुदाय : प्रकृति के संरक्षक

परिचय

जनजातीय पारिस्थितिक ज्ञान संस्कृति से उत्पन्न होता है, न कि केवल जंगलों से निकटता या संरक्षण के रोमांटिक नारों से। गीत, अनुष्ठान, शिल्प, त्योहार और वास्तुकला पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही प्रथाओं के माध्यम से भूमि संबंधों को संरक्षित करते हैं।

पारिस्थितिक ज्ञान के रूप में संस्कृति

- भारत में 700 से अधिक समुदायों में 104 मिलियन से अधिक आदिवासी लोग रहते हैं, जो आसान बदलावों का विरोध कर रहे हैं।
- मौखिक परंपराएँ कहानियों, गीतों, अनुष्ठानों, समारोहों और सामूहिक मौसमी ज्ञान के माध्यम से पारिस्थितिक स्मृति को संजोकर रखती हैं।
- बिलिगिरिरंगन पहाड़ियों में सोलिगा परंपराएँ मौखिक प्रसारण और हुली वीरप्पा पूजा के माध्यम से वन ज्ञान को समाहित करती हैं।
- तारागु बेंकी द्वारा नियंत्रित कचरे की आग ने गर्मियों में लगने वाली जंगल की आग को रोका और सांस्कृतिक निर्देशों के माध्यम से घास के विकास को प्रोत्साहित किया।
- बाघ अभ्यारण्य के भीतर अधिकारों की मान्यता से स्वीकार किया गया कि औपचारिक संस्थानों के अस्तित्व में आने से बहुत पहले ही सोलिगा संरक्षण जारी था।

त्यौहार, वास्तुकला और उपचार

- वायनाड सामुदायिक बीज महोत्सव और तमिलनाडु काकोल्ली हिल्स में आयोजित बाजरा उत्सव फसल-बीज विविधता को बनाए रखने में सहायक होते हैं।
- आदिवासी महिलाएँ पारंपरिक बीजों का आदान-प्रदान करती हैं, जिससे मिट्टी की अनुकूलता, वर्षा के पैटर्न, कीट प्रतिरोधक क्षमता और पोषक गुणों का संरक्षण होता है।

- नियामगिरि पहाड़ियों में डोंगरिया कोंध समुदाय की कृषि, नियाम राजा की आस्था को संयम आधारित कृषि से जोड़ती है।
- डोंगरिया के खेत में बाजरा, अरहर, कंद, जरहुल के फूल और महुआ की फसलें उगाई जाती हैं।
- खासी-जयंतिया लिविंग रूट ब्रिज को बनने में पचास साल तक का समय लग सकता है, जो अंतरपीढ़ीगत जिम्मेदारी को दर्शाता है।
- इरुला समुदाय के वैद्य (Healers) सत्तर से अधिक जंगली पौधों का उपयोग करते हैं और जड़ों, छाल व पत्तियों को इस तरह इकट्ठा करते हैं कि प्रकृति को नुकसान न पहुँचे।

संस्थागत मान्यता और आगे की राह

- उमंगलाई, ओरान, सरना और कावु जैसे पवित्र उपवन सांस्कृतिक दृढ़ विश्वास के माध्यम से लुप्तप्राय वनस्पतियों का संरक्षण करते हैं।
- टोडा समुदाय के बैरल-वॉल्टेडअर्श आश्रयों में बांस, बेंत और घास-फूस का उपयोग किया जाता है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र में होने वाले असंतुलन को कम किया जा सके।
- टोडा समुदाय की 'पूटकुझ' कढ़ाई सांस्कृतिक स्मृति के माध्यम से दुर्लभ कुरिंजी सहित स्थानीय वनस्पतियों को प्रतिबिंबित करती है।
- शास्त्रीय कलाओं को संस्थागत पहचान मिली है, जबकि आदिवासी परंपराओं में वैसी शिक्षण पद्धति, मंच और समर्थन की कमी है।
- मई 2026 में SPIC MACAY ने आईआईटी खड़गपुर में घुस्साडी, छऊ व होजगिरी जैसी जनजातीय एवं लोक परंपराओं का प्रदर्शन आयोजित किया।
- छात्रों ने गोंड चित्रकला तथा प्राकृतिक रेशों पर आधारित हथकरघा बुनाई सीधे पारंपरिक शिल्पगुरुओं (Master Artisans) से सीखी।

निष्कर्ष

जनजातीय ज्ञान प्रणालियों को संस्थागत स्तर पर समान गंभीरता की आवश्यकता है, न कि उनके महिमा मंडन या कम समर्थन की। इन परंपराओं की रक्षा से संचित पारिस्थितिक समझ, सांस्कृतिक निरंतरता और भारत की जैव विविधता संबंधी कल्पना की रक्षा होती है।

4. सांस्कृतिक सेतु के रूप में ग्रामीण त्योहार

परिचय

भारत के ग्रामीण त्योहार महात्मा गांधी की ग्राम-केंद्रित कल्पना को साकार रूप देते हैं, जो सांस्कृतिक निरंतरता को सामाजिक एकता से जोड़ते हैं। कच्छ से लेकर लाहौल-स्पीति तक, ये त्योहार आस्था, ऋतुओं, व्यापार और प्रदर्शन को जीवंत विरासत में परिवर्तित करते हैं।

ग्रामीण त्यौहार और सामाजिक सामंजस्य

- भारत के ग्रामीण समाजों में ग्रामीण त्योहार आस्था, ऋतुओं, संगीत, व्यापार, खेल और समुदाय को आपस में जोड़ते हैं।
- हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, जैन, सिख, आदिवासी और स्वदेशी समूह सामूहिक रूप से अपनी विशिष्ट पहचान का जश्न मनाते हैं।
- ये उत्सव मौसम के बदलाव, देवी-देवताओं के सम्मान, फसल की कटाई और परंपराओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम हैं।
- धोरडो का रण उत्सव कच्छ की हस्तशिल्प, व्यंजन, लोक प्रदर्शन और सामुदायिक पर्यटन का संगम है।
- कावंत मेला, कुलसेकरापट्टिनम और तरनेतर उत्सव जनजातीय, तटीय और विवाह-संबंधी रीति-रिवाजों की विविधता का प्रदर्शन करते हैं।
- हिलजात्रा, केरल ग्रामम और बड़ा बडुआ डाका जैसे उत्सव कृषि, शिल्प और स्मृति परंपराओं को संरक्षित करते हैं।

पर्यटन, व्यापार और आजीविका

- धोरडो को 2023 में संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) द्वारा सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव के रूप में मान्यता प्राप्त हुई।
- द्रौपदी के स्वयंवर से प्रेरित तरनेतर मेला, गुजरात में 50,000 से अधिक आगंतुकों को आकर्षित करता है।
- लाहौल-स्पीति में फागली उत्सव सर्दियों में एकजुटता बढ़ाने के लिए दीयों, 'टोटू', 'मार्चु' और पशुधन के सम्मान जैसी परंपराओं का उपयोग करता है।
- बस्तर का गोंचा उत्सव मुरिया, गोंड और भतरा जनजातियों की परंपराओं, बाँस की टुपकी (Tupki) तथा जनजातीय सांस्कृतिक स्मृतियों का संगम है।
- फसल चक्र उत्सवों में लोहड़ी, पोंगल, भोगाली बिहू, होली, गणगौर, बैल पोला और चिखल कालो शामिल हैं।
- पुष्कर, नागौर, चंद्रभागा-झालरापाटन, सोनपुर, बटेश्वर-यमुना और वौठा-सप्तसंगम पशुधन व्यापार और तीर्थयात्रा को जोड़ते हैं।

वैश्विक अपील और नीतिगत समर्थन

- किसामा हेरिटेज विलेज में हॉर्नबिल महोत्सव पर 17 नागा जनजातियों का प्रदर्शन किया गया है तथा जीरो महोत्सव संगीत और रोजगार को जोड़ता है।
- किला रायपुर ग्रामीण ओलंपिक की शुरुआत 1933 में हुई, जिसने कबड्डी, कुश्ती, एथलेटिक्स और रस्साकशी जैसे खेलों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई।
- ग्रामीण त्योहार कारीगरों, कलाकारों, कुम्हारों, खाद्य विक्रेताओं, गाइडों, होमस्टे और छोटे उद्यमियों को सक्रिय करते हैं।
- तारनेतर की छतरियाँ, कावंत के आभूषण, कच्छ के हस्तशिल्प और पुष्कर के वस्त्र पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे पर्यटन का मौसम लंबा होता है और निवेश बढ़ता है।

- पर्यटन मंत्रालय सतत और जिम्मेदार पर्यटन स्थलों के लिए स्वदेश दर्शन ग्रामीण सर्किट और 2.0 उपयोग करता है।
- प्रसाद, प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान, पर्यटन मित्र, पर्यटन दीदी और वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम-II आजीविका का समर्थन करते हैं।

निष्कर्ष

ग्रामीण त्यौहार विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ आजीविका, बाजार और सामुदायिक विश्वास को भी बढ़ावा देते हैं। आस्था, लोककथाओं, व्यापार, खेल और उत्सव के माध्यम से वे विविधता में एकता को मजबूत करते हैं।

5. ग्रामीण सांस्कृतिक पर्यटन : सामुदायिक-नेतृत्व वाला विकास मॉडल

परिचय

ग्रामीण सांस्कृतिक पर्यटन, ग्राम शिल्प, त्योहारों, स्वदेशी ज्ञान और होमस्टे के माध्यम से विरासत संरक्षण को सामुदायिक आजीविका से जोड़ता है। इसके लिए सामुदायिक स्वामित्व, नीतिगत समर्थन और टिकाऊ बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता होती है ताकि इसका व्यवसायीकरण न हो और लाभ का रिसाव न हो।

ग्रामीण पर्यटन की क्षमता और जीवंत विरासत

- एक अरब से अधिक आबादी वाले भारत में से लगभग 68% लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं।
- गाँवों में भाषाई, कलात्मक और आध्यात्मिक परंपराएँ संजोई हुई हैं जिनमें हथकरघा से लेकर पट्टचित्र और आदिवासी नृत्य शामिल हैं।
- पोचमपल्ली की इकत अर्थव्यवस्था यह दर्शाती है कि जीवित विरासत आजीविका कमा रही है, न कि केवल बुनाई परंपराओं का संरक्षण कर रही है।
- संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) ने 2021 में पोचमपल्ली को मान्यता दी; इसके बाद धोरडो को 2023 में मान्यता मिली।
- मदला, धुदमारास और खोनोमा को संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के अपग्रेड प्रोग्राम में शामिल किया गया है, जो ग्रामीण विरासत के वैश्विक समावेश का संकेत है।
- वर्ष 2024 में घरेलू पर्यटन में 300 करोड़ से ज़्यादा यात्राएँ हुई, लेकिन फायदे मुख्य रूप से शहरों की विरासत तक ही सीमित रहे।

सामुदायिक मॉडल और नीति संरचना

- रघुराजपुर में पट्टचित्र, ताड़ के पत्तों पर नक्काशी, मुखौटे, लकड़ी के शिल्प और गोटीपुआ कला का संरक्षण किया जाता है, जिससे प्राप्त राजस्व शिल्पकारों को मिलता है।
- ओडिशा पर्यटन और भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत ट्रस्ट (INTACH) ने मिलकर रघुराजपुर का विकास किया, जिसने रिवर्स माइग्रेशन को सक्षम किया।
- होडका, रबारी-हरिजन हस्तकलाओं को मिट्टी के घरों में ठहरने, स्थानीय भोजन और पर्यटक कार्यशालाओं से जोड़ता है।
- असम के 'पूर्व के मैनचेस्टर' कहे जाने वाले सुआलकुची में मूगा रेशम का संरक्षण किया जाता है और इसने 2024 में सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम शिल्प श्रेणी का पुरस्कार जीता।
- ग्रामीण पर्यटन और ग्रामीण होमस्टे के लिए राष्ट्रीय रणनीति आजीविका सृजन के साथ-साथ विरासत संरक्षण का मार्गदर्शन करती है।
- वर्ष 2023-24 में सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता में 2,500 से अधिक प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई, जिससे अनुकरणीय ग्राम मॉडल तैयार हुए।

सहायता प्रणालियाँ, कमियाँ और सतत विकास के रास्ते

- स्वदेश दर्शन 2.0 के तहत 2,207.81 करोड़ रुपये की 53 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई, जिनमें 115 करोड़ रुपये के विरासत गाँव भी शामिल हैं।
- जनजातीय होमस्टे योजना के तहत 1,000 होमस्टे विकसित करने का लक्ष्य है, जिसमें प्रत्येक इकाई को अधिकतम ₹5 लाख तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया हस्तशिल्प गाँवों को बढ़ावा देते हैं, लेकिन पर्यटन को समुदाय-केंद्रित ही रहना चाहिए।
- खोनोमा, मावलिननॉन्ग और धुडमारास जैसे गाँव नागा संस्कृति, स्वच्छता और आदिवासी कला के संरक्षण में सामुदायिक स्वामित्व को दर्शाते हैं।
- बुनियादी ढाँचे की कमियों में सड़कें, साइनबोर्ड, पीने का पानी, स्वच्छता, कचरा निपटान, अंतिम-मील परिवहन और इंटरनेट शामिल हैं।
- अत्यधिक व्यावसायीकरण, लाभ का रिसाव और वहन क्षमता पर पड़ने वाला दबाव पंचायतों, स्वयं सहायता समूहों (SHGs), युवाओं और जिला प्रशासन के बीच कमजोर समन्वय को उजागर करता है।

निष्कर्ष

ग्रामीण पर्यटन के सतत विकास के लिए क्लस्टर योजना, वहन क्षमता मूल्यांकन, कौशल प्रमाणीकरण, भौगोलिक संकेतक (GI) ब्रांडिंग, होमस्टे मानक और महिला स्वयं सहायता समूह ग्रामीण पर्यटन को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वदेश दर्शन 2.0, प्रसाद, पीएम विश्वकर्मा और ई-श्रम को एकीकृत करके एक विनियमित ग्रामीण विरासत मूल्य श्रृंखला का निर्माण किया जा सकता है।

6. एक भारत श्रेष्ठ भारत : भारत की सांस्कृतिक विविधता के माध्यम से एकता का उत्सव

परिचय

भारत की सांस्कृतिक विविधता भूदृश्यों, भाषाओं, परंपराओं व समुदायों के माध्यम से साझा सभ्यतागत एकता को दर्शाती है। एक भारत श्रेष्ठ भारत (EBSB) विविधता का सम्मान करते हुए आपसी संवाद, एकीकरण एवं राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है।

सांस्कृतिक विविधता और राष्ट्रीय एकता

- वर्ष 2015 में शुरू किया गया ईबीएसबी, राष्ट्रीय एकता और अखंडता को मजबूत करते हुए विविधता का सम्मान करता है।
- राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों के बीच साझेदारी से भाषाओं, साहित्य, परंपराओं, कलाओं, व्यंजनों, त्योहारों और जीवनशैली में आदान-प्रदान संभव हो पाता है।
- मेले और समारोह ऐसे सार्वजनिक स्थान बनाते हैं जहाँ समुदाय सामाजिक-क्षेत्रीय सीमाओं से परे एकत्रित होते हैं।
- आदिवासी समुदाय कला, शिल्प, संगीत, नृत्य और प्रकृति के साथ सामंजस्य के माध्यम से स्वदेशी ज्ञान को संरक्षित करते हैं।
- भारत के व्यापक सांस्कृतिक परिदृश्य में जनजातीय विरासत समुदाय, लचीलेपन और सामूहिक पहचान को सुदृढ़ करती है।

साझा विरासत और जीवंत परंपराएँ

- त्योहार और स्थानीय उत्सव सम्मान, सहअस्तित्व और साझा विरासत के सार्वभौमिक संदेश देते हैं।
- शास्त्रीय एवं लोक नृत्य तथा क्षेत्रीय संगीत स्थानीय आजीविका को बनाए रखते हुए रचनात्मक उत्कृष्टता को बढ़ावा देते हैं।
- हस्तशिल्प और पारंपरिक शिल्प कौशल विरासत में मिले ज्ञान को संरक्षित करते हुए क्षेत्रीय रचनात्मकता और आजीविका को दर्शाते हैं।
- लोकगीत एवं कहानियाँ समुदायों के बीच प्रेम, सद्भाव व आपसी सम्मान का संचार करती हैं।
- कला, रंग और संगीत की विविध अभिव्यक्तियाँ राष्ट्रव्यापी स्तर पर विविधता की सुंदरता और एकता की सामाजिक शक्ति का प्रतीक हैं।

संस्थागत पहुँच और नागरिक सहभागिता

- ईबीएसबी (EBSB) के तहत, छात्र विनिमय कार्यक्रम, सांस्कृतिक उत्सव और भाषा संबंधी पहल युवाओं के लिए गहन अनुभव प्रदान करते हैं।
- पारंपरिक कला प्रदर्शन, डिजिटल सहभागिता और पर्यटन आधारित अनुभव विविधता में एकता के प्रत्यक्ष अनुभव को बढ़ावा देते हैं।
- यह पहल राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा, संस्कृति, युवा मामलों, पर्यटन और जनसंपर्क को एकीकृत करती है।
- सहयोगात्मक भागीदारी और सांस्कृतिक सहभागिता नागरिकों को विरासत को समझने में मदद करती है जिससे राष्ट्रीय एकता मजबूत होती है।
- ईबीएसबी राष्ट्र निर्माण के सतत कार्य में लगा हुआ है जो एकता, समावेशिता, पारस्परिक सम्मान और सद्भाव को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष

ईबीएसबी सांस्कृतिक विविधता को संवाद, सहभागिता और साझा जुड़ाव के एक व्यावहारिक साधन में परिवर्तित करता है। यह भारत की बहुलतावादी पहचानों का उत्सव मनाता है और साथ ही राष्ट्र को एकजुट करने वाले सभ्यतागत बंधनों को सुदृढ़ करता है।

7. नारी शक्ति : विरासत का संरक्षण, प्रगति का मार्ग

परिचय

ग्रामीण महिलाएँ परंपराओं, भाषाओं, शिल्पों, व्यंजनों और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों के माध्यम से भारत की जीवंत विरासत को संरक्षित करती हैं। उनका सशक्तीकरण सांस्कृतिक निरंतरता को आजीविका, समावेशन, पर्यावरणीय स्थिरता और 2047 के लिए विकसित भारत से जोड़ता है।

महिलाएँ जीवंत विरासत की संरक्षक के रूप में

- ग्रामीण महिलाएँ कृषि, प्रकृति और सामुदायिक स्मृति से जुड़े गीतों, नृत्य, बुनाई और अनुष्ठानों को संरक्षित करती हैं।
- असम का बिहू और तमिलनाडु का पोंगल त्योहार गीतों, कोलम (रंगोली), खान-पान की परंपराओं और खेती से जुड़े समारोहों को जीवित रखते हैं।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और जनजातीय संस्थान महिलाओं के बीज, औषधीय, जल और खाद्य संबंधी ज्ञान का दस्तावेजीकरण करते हैं।
- हिमालयी महिलाएँ औषधीय जड़ी-बूटियों और जलवायु-प्रतिरोधी खेती का संरक्षण करती हैं तथा मध्य भारत की आदिवासी महिलाएँ जैव विविधता की रक्षा करती हैं।
- राजस्थान का मांड-पनिहारी, छत्तीसगढ़ की पांडवनी और बंगाल के बाउल पीढ़ियों से चले आ रहे गीतों के माध्यम से सामुदायिक स्मृतियों को संजोते हैं।
- स्थानीय भाषाएँ महिलाओं की लोरी, विवाह गीतों, फसल कटाई के गीतों, भक्ति गीतों और सामुदायिक कथाओं के माध्यम से जीवित रहती हैं।

हस्तशिल्प, खाद्य प्रणालियाँ और महिला नेतृत्व वाली संस्थाएँ

- मधुबनी, फुलकारी, टोडा कढ़ाई, पूर्वोत्तर के बांस शिल्प और कच्छ की कढ़ाई सामुदायिक पहचान बनाए रखती हैं।
- हथकरघा बुनने वाली महिलाएँ बुनाई की परंपराओं को संरक्षित करती हैं, जबकि शिल्प कला इतिहास, कलात्मक अभिव्यक्तियों और सांस्कृतिक प्रतीकों को समाहित करती है।

- मौटे अनाज के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के बाद मौटे अनाज से युक्त आहार, किण्वन और मौसमी खाद्य पदार्थों ने ध्यान आकर्षित किया, जिससे पोषण और लचीलेपन को बढ़ावा मिला।
- दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) 10 करोड़ से अधिक महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़ती है।
- स्वयं सहायता समूह (SHG) प्रशिक्षण, ऋण और बाजार उपलब्ध कराते हैं, जिससे सांस्कृतिक प्रथाएँ आर्थिक रूप से टिकाऊ बनी रहती हैं।
- केरल में कुदुम्बश्री महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों के माध्यम से पारंपरिक खाद्य पदार्थों और स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देती है।

नीति समर्थन, चुनौतियाँ और विकसित भारत का मार्ग

- जीवनचक्र आधारित नीतियों ने स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण, आजीविका, वित्तीय समावेशन, नेतृत्व, स्वच्छता, आवास, ईंधन और पानी जैसे क्षेत्रों का विस्तार किया है।
- पारंपरिक उद्योगों के पुनरुद्धार हेतु निधि योजना (SFURTI) बुनियादी ढाँचे, कौशल और बाजारों के माध्यम से कारीगर समूहों को सहायता प्रदान करती है।
- वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (ODOP) क्षेत्रीय विशिष्ट शिल्पकला को बढ़ावा देता है तथा ट्राइबल कोऑपरेटिव मार्केटिंग डेवलपमेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया स्वदेशी उत्पादों का विपणन करता है।
- राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम उत्पाद नवाचार, कौशल संवर्धन और विपणन को बढ़ावा देता है तथा भौगोलिक संकेतक विशिष्टता की रक्षा करता है।
- बिहार की मधुबनी कला, कच्छ की कढ़ाई सहकारी समितियाँ और पूर्वोत्तर के बुनाई उद्यम आजीविका और पहचान का विस्तार करते हैं।
- व्यवसायीकरण, मशीनी प्रतिस्पर्धा, सीमित बाजार और डिजिटल निरक्षरता महिला कारीगरों के सांस्कृतिक श्रम को कमजोर करते हैं।

निष्कर्ष

ऋण, कौशल, डिजिटल साक्षरता, ब्रांडिंग, बाजार संपर्क और सांस्कृतिक पर्यटन को मजबूत करने से महिला नेतृत्व वाले विरासत उद्यमों में परिवर्तन आ सकता है। सशक्त नारी शक्ति सांस्कृतिक विविधता, स्थायी आजीविका और एक आत्मविश्वासी विकसित भारत के लिए आवश्यक है।

8. भाषाएँ, बोलियाँ और मौखिक परंपराएँ: ग्रामीण भारत की आत्मा का संरक्षण

परिचय

ग्रामीण भारत की भाषाएँ, बोलियाँ और मौखिक परंपराएँ उसकी पहचान, स्मृति, स्वदेशी ज्ञान और सांस्कृतिक निरंतरता को संरक्षित रखती हैं। ये प्रवासन, डिजिटल एकरूपता और पीढ़ियों के बीच ज्ञान के हस्तांतरण जैसी चुनौतियों का सामना करते हुए सामाजिक सामंजस्य को मजबूत करती हैं।

भाषाई विविधता और सांस्कृतिक निरंतरता

- भारत के गाँव भाषाओं, बोलियों और गीतों को संरक्षित रखते हैं, जो पहचान, स्मृति और सामाजिक एकता को आपस में जोड़ते हैं।
- 2011 की जनगणना के अनुसार 22 अनुसूचित भाषाएँ, 121 अन्य भाषाएँ और 1,369 मातृभाषाएँ दर्ज की गई हैं।
- ग्रामीण भारत में सैकड़ों बोलियाँ और 700 से अधिक ऐसे स्वदेशी समुदाय हैं जिनकी अपनी अनूठी ज्ञान प्रणालियाँ हैं।
- उत्तर भारत में भोजपुरी, अवधी, ब्रज, बुंदेली और बघेली जैसी बोलियाँ क्षेत्रीय पहचान को सशक्त बनाती हैं, जबकि हिमालयी क्षेत्रों में गढ़वाली और कुमाऊँनी भाषाएँ गाँवों की सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखती हैं।
- दक्षिणी और जनजातीय क्षेत्र तुलू कोडवा, संताली-मुंडारी-हो, गोंडी, भीली और कोरकू संस्कृति को बनाए रखते हैं।
- उत्तर-पूर्वी परंपराओं में खासी-गारो-मिजो-आओ-अंगामी, शामिल हैं जो विभिन्न प्रकार की भाषाई और सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं।

मौखिक ज्ञान और सतत ग्रामीण जीवन

- मौखिक परंपराओं में मौसम के अनुसार गाए जाने वाले लोक गीत, वीरगाथाएँ, मौखिक महाकाव्य, कहावतें-पहेलियाँ और वंशावलियाँ शामिल हैं।
- फसल कटाई और शादियों के दौरान बुजुर्ग कहानियाँ सुनाते हैं, जिससे शिक्षा, नैतिक उपदेश और एकता बनी रहती है।
- पंडवानी, पाबूजी की फड़, ओग्गु कथा, बाउल और यक्षगान लोगों के दृष्टिकोण को संरक्षित करते हैं।
- कृषि संबंधी ज्ञान पक्षियों के प्रवास, पुष्पन चक्र, हवाओं, बादलों, मिश्रित खेती और जल संचयन पर नजर रखता है।
- स्थानीय बोलियों में जैव विविधता, पौधों की प्रजातियाँ, औषधीय जड़ी-बूटियाँ, मिट्टी की स्थिति और पारिस्थितिक प्रक्रियाओं की जानकारी निहित होती है।
- पारंपरिक स्वास्थ्य प्रणालियाँ औषधीय पौधों के उपयोग, उपचारों और निवारक प्रथाओं को मौखिक रूप से प्रसारित करके संरक्षित करती हैं।

डिजिटल संरक्षण, चुनौतियाँ और आगे की राह

- कच्छ की बुनाई, उत्तर-पूर्वी भारत के बांस शिल्प और मध्य भारत के धातु शिल्प गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित आजीविका और ज्ञान को संरक्षित रखते हैं।
- डिजिटल अभिलेखागार और विश्वविद्यालय लोकगीतों, गोंडी, भीली, मिजो, स्वदेशी शब्दावली और संग्रहों का दस्तावेजीकरण करते हैं।

- भाषिनी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और ध्वनि प्रौद्योगिकी का उपयोग करता है तथा सामुदायिक रेडियो स्थानीय बोलियों तक पहुँच को मजबूत करता है।
- भाषा परिवर्तन, प्रवासन, ज्ञान धारकों की संख्या में कमी, डिजिटल एकरूपता और भाषा का लुप्त होना स्वदेशी ज्ञान के लिए खतरा हैं।
- संथाली को 2003 में आठवीं अनुसूची का दर्जा दिया गया था और पंडित रघुनाथ मुर्मू की ओल चिकी लिपि ने इसके पुनरुद्धार को मजबूत किया।
- प्राथमिकताओं में मातृभाषा में शिक्षा, लुप्तप्राय भाषाओं का दस्तावेजीकरण, सामुदायिक अभिलेखागार, युवाओं की भागीदारी, आजीविका और कृत्रिम बुद्धिमत्ता शामिल हैं।

निष्कर्ष

भाषाएँ, बोलियाँ और मौखिक परंपराएँ मात्र संचार के साधन नहीं, बल्कि जीवंत सांस्कृतिक संरचनाएँ हैं। इनका संरक्षण सामाजिक समावेश, स्वदेशी ज्ञान, सतत विकास और भारत की सांस्कृतिक निरंतरता को बढ़ावा देता है।

9. भारत की पाक परंपराओं की विविधता

परिचय

भारतीय व्यंजन रोजमर्रा की खान-पान की परंपराओं के माध्यम से सांस्कृतिक बहुलवाद, पारिस्थितिक विविधता, सामुदायिक स्मृति और क्षेत्रीय पहचान को प्रतिबिंबित करते हैं। खाद्य विविधता पोषण, ग्रामीण आजीविका, जैव विविधता संरक्षण और टिकाऊ उपभोग को भी बढ़ावा देती है।

क्षेत्रीय विविधता, रीति-रिवाज और आदान-प्रदान

- पंजाब की मक्की दी रोटी-सरसों दा साग, बंगाल का माछेर झोल और बिहार का लिट्टी चोखा विविधता को व्यक्त करते हैं।
- केरल का ओणम साध्य, राजस्थान का दाल बाटी चूरमा और कर्नाटक का रागी मुड्डे पर्यावरण अनुकूल खाद्य पदार्थों को दर्शाते हैं।
- गुजरात ढोकला, हांडवो, उंधियू और महाराष्ट्र पूरन पोली, ज्वार भाकरी, मिसल पाव जैसे व्यंजनों की परंपरा को संजोए हुए है।
- उत्तर-पूर्वी व्यंजनों में असम का खार, नागालैंड का स्मोक्ड मीट, मणिपुर का एरोम्बा, मिजोरम का बाई और सिक्किम का गुंडरुक के व्यंजन शामिल हैं।
- त्योहारी व्यंजन जैसे मोदक, पीठा, तिलकुट, सेवइयाँ और लंगर अनुष्ठान-सामुदायिक एकता का निर्माण करते हैं।
- फारसी-मध्य एशियाई व्यंजन और पुर्तगाली व्यंजन मिर्च, आलू, टमाटर और काजू का भारतीय व्यंजन में प्रवेश प्रवास, व्यापार और आदान-प्रदान के माध्यम से हुआ।

स्वदेशी खाद्य पदार्थ, पोषण और स्थिरता

- जनजातीय खाद्य प्रणालियाँ पारिस्थितिक ज्ञान को संरक्षित करते हुए वन उत्पादों, जंगली खाद्य पदार्थों, अनाजों और स्थानीय संसाधनों का उपयोग करती हैं।
- ओडिशा की लाल चींटी की चटनी, महुआ से बने खाद्य पदार्थ और उत्तर-पूर्वी बांस के अंकुर स्वदेशी खाद्य प्रथाओं को संरक्षित करते हैं।
- आदिवासी आहार में बाजरा, कंद, मशरूम, जंगली फल और ब्रेड शामिल होते हैं, जो जैव विविधता संरक्षण में सहायक होते हैं।
- रागी, बाजरा, ज्वार और मंडुआ जैसे मोटे अनाजों को कम पानी की आवश्यकता होती है और वे कठोर जलवायु को सहन कर सकते हैं।
- फर्मेंटेड खाद्य पदार्थ जैसे इडली, डोसा, ढोकला, कांजी और बांस-सोयाबीन से बने उत्पाद पाचन क्रिया को बेहतर बनाते हैं।
- मिश्रित फसल का उत्पादन, मौसमी खान-पान और स्थानीय सामग्री का उपयोग पारिस्थितिक दबाव को कम करते हुए ग्रामीण पोषण को मजबूत करता है।

संरक्षण, नीति और भविष्य के मार्ग

- शहरीकरण और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों पर निर्भरता आहार विविधता को कम करती है, जिससे प्राचीन रेसिपी और पारंपरिक सामग्रियों के लुप्त होने का खतरा पैदा हो गया है।
- संस्थानों, शोधकर्त्ताओं, सांस्कृतिक संगठनों और समुदायों द्वारा दस्तावेजीकरण से रेसिपी, तौर-तरीकों और सामग्री को आगे बढ़ाया जा सकता है।
- पाक कला पर्यटन, खाद्य उत्सव और डिजिटल प्लेटफॉर्म व्यंजनों को बढ़ावा देते हैं तथा भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग व्यंजनों की विशिष्टता को संरक्षित करते हैं।
- इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स 2023 ने पोषण, स्थिरता और जलवायु अनुकूलन क्षमता पर प्रकाश डालते हुए पारंपरिक अनाजों को पुनर्जीवित किया।
- प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम औपचारिकीकरण योजना (PMFME) और एक जिला एक उत्पाद (ODOP) स्थानीय खाद्य अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करते हैं।
- ईट राइट इंडिया, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (NFSM), स्वदेश दर्शन 2.0 और जीआई टैग टिकाऊ खाद्य विविधता का समर्थन करते हैं।

निष्कर्ष

भारत की खाद्य विरासत सांस्कृतिक पहचान, ग्रामीण आजीविका, पोषण सुरक्षा और पारंपरिक ज्ञान की रक्षा करती है। स्थानीय खान-पान की परंपराओं को पुनर्जीवित करने से रोजमर्रा के भोजन के माध्यम से विविधता में एकता का जीवंत अनुभव होता है।

10. ज्ञान भारतम : भारत की पांडुलिपि विरासत का संरक्षण

परिचय

भारत की हस्तलिखित विरासत नालंदा-तक्षशिला से लेकर अब तक दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य व समाज के क्षेत्र में ज्ञान को संरक्षित करती है। भारतनेट, डिजिलॉकर, यूनिफाइड मोबाइल एप्लिकेशन फॉर न्यू-एज गवर्नेंस (UMANG), ई-हॉस्पिटल और एकीकृत भुगतान इंटरफेस (UPI) जैसे डिजिटल इंडिया उपकरण इस विरासत के हस्तांतरण को आकार देते हैं।

मिशन, सम्मेलन और राष्ट्रीय धरोहर संबंधी दृष्टिकोण

- ज्ञान भारतम मिशन (GBM) परंपरा को प्रौद्योगिकी से जोड़ते हुए पांडुलिपियों का संरक्षण, डिजिटलीकरण और प्रसार करता है।
- ज्ञान भारतम् सम्मेलन 11 से 13 सितंबर, 2025 के बीच नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित किया गया था।
- संस्कृति मंत्रालय ने विद्वानों, विशेषज्ञों, संस्थानों और पेशेवरों सहित 1,100 से अधिक प्रतिभागियों की मेजबानी की।
- ज्ञान भारतम मिशन का अनुमान है कि, लगभग 1 करोड़ से अधिक (10 मिलियन से अधिक) पांडुलिपियाँ उपलब्ध हैं, जिनका संरक्षण उनकी उत्पत्ति, भाषा या लिपि की परवाह किए बिना किया जाएगा।
- राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमत्ता नवाचार चैलेंज 'ज्ञान-सेतु' छात्रों, शोधकर्त्ताओं, संस्थानों और स्टार्ट-अप्स को इसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित करती है।
- पांडुलिपि विरासत में दर्शन, चिकित्सा, शासन और कला जैसे क्षेत्र शामिल हैं, जिसके लिए एआई-आधारित वैश्विक पहुँच की आवश्यकता है।

पहुँच, संरक्षण और डिजिटल अवसंरचना

- देश भर में फैले क्लस्टर सेंटर (CCs) और स्वतंत्र सेंटर (ICs) इस मिशन का एक्सेस नेटवर्क बनाते हैं।
- नोडल समन्वय प्राधिकरणों के अंतर्गत 40 से अधिक केंद्रीय परिषदों/केंद्र शासित प्रदेशों और 28 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को शामिल किया गया।
- तकनीकी भागीदार मेटाडाटा निर्माण, उपकरण लगाने, एआई-एकीकृत प्लेटफॉर्म और राष्ट्रीय डिजिटल भंडार (NDR) डेटा भंडारण में सहायता प्रदान करते हैं।
- वैज्ञानिक संरक्षण में निवारक-उपचारात्मक विधियों और हाई-स्टैंडर्ड डिजिटाइजेशन, एनडीआर एक्सेस और क्लाउड डिजास्टर रिकवरी का उपयोग किया जाता है।
- भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (NAI) छेड़छाड़ का पता लगाने के लिए चेकसम सत्यापन के साथ उच्च-रिजॉल्यूशन रिकॉर्ड बनाता है।
- मेटाडेटा, कैटलॉगिंग और डॉक्यूमेंटेशन रिसर्च के लिए प्रमाणिकता, ट्रेसिबिलिटी और मूल स्रोत के वेरिफिकेशन को सुरक्षित रखते हैं।

ज्ञान का पुनरुद्धार, क्षमता और वैश्विक पहुँच

- मैन्युस्क्रिप्ट रिसोर्स सेंटर (MRCs) पांडुलिपियों की पहचान, डॉक्यूमेंटेशन और कैटलॉगिंग करते हैं, जबकि मैन्युस्क्रिप्ट कंजर्वेशन सेंटर (MCCs) संग्रहों को सुरक्षित रखते हैं।
- डिजिटलीकरण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से हस्तलिखित पाठ पहचान (HTR), माइक्रोफिल्मिंग और क्लाउड-आधारित मेटाडेटा सिस्टम का उपयोग किया जाता है।
- अनुसंधान, अनुवाद, प्रकाशन और प्रतिकृतियाँ दुर्लभ पांडुलिपियों को कई भाषाओं और वैश्विक स्कॉलरशिप के लिए सुलभ बनाती हैं।
- ट्रांसक्रिप्शन, पैलियोग्राफी, संरक्षण और पांडुलिपि अध्ययन में ट्रेनिंग से स्कॉलर, संरक्षक और ट्रांसक्राइबर तैयार होते हैं।
- मैन्युस्क्रिप्ट रिसर्च पार्टनर और इंटरनेशनल इमेज इंटरऑपरेबिलिटी फ्रेमवर्क (IIIF) प्लेटफॉर्म प्रदर्शनियों, संग्रहालयों और राजस्व-साझाकरण का उपयोग करते हैं।
- वैश्विक सहयोग विरासत और विकास के तहत पांडुलिपि ज्ञान को पाठ्यक्रम, उच्च शिक्षा और कौशल में समाहित करता है।

निष्कर्ष

यूपीआई और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग (दीक्षा) की तरह, जीबीएम डिजिटल इंडिया को विरासत संरक्षण तक विस्तारित करता है। एआई कैटलॉगिंग, रिपॉजिटरी, स्क्रिप्ट डिक्रिप्शन और बहुभाषी प्लेटफॉर्म विकसित भारत@2047 के लिए पाँच मिलियन से अधिक पांडुलिपियों को साझा कर सकते हैं।

11. मेरा गाँव मेरी धरोहर

परिचय

मेरा गाँव मेरी धरोहर (MGMD) राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन (NMCM) के अंतर्गत भारत की ग्रामीण विरासत का डिजिटल रूप से दस्तावेजीकरण करता है। यह गाँव-वार सांस्कृतिक प्रोफाइल के माध्यम से स्थानीय परंपराओं, इतिहासों, भाषाओं, खान-पान की प्रथाओं, त्योहारों और ऐतिहासिक स्थलों को संरक्षित करता है।

डिजिटल विरासत के रूप में ग्राम संस्कृति

- भारत के गाँव परंपराओं, स्मृतियों, भाषा और कला, वास्तुकला और सामुदायिक ज्ञान के जीवंत भंडार हैं।
- भारत सरकार ने राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन के तहत मेरा गाँव मेरी धरोहर की शुरुआत की।
- गाँव की पहचान को संरक्षित करने के लिए आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत संस्कृति मंत्रालय एमजीएमडी का नेतृत्व करता है।

- यह मंच मौखिक परंपराओं, स्थानीय इतिहासों, रीति-रिवाजों, कला रूपों, भाषाओं, त्योहारों और ऐतिहासिक स्थलों को रिकॉर्ड करता है।
- गाँव-वार सांस्कृतिक प्रोफाइल राज्य-स्तर के दस्तावेजीकरण से परे भारत की विविधता को पेश करती हैं और स्थानीय पहचान को बढ़ाती हैं।

कवरेज, पैमाना और स्थानीय प्रामाणिकता

- एमजीएमडी कला-शिल्प, पर्यावरण-अनुकूल, शैक्षणिक, महाकाव्य-संबंधी, ऐतिहासिक और स्थापत्य कला से जुड़ी विरासत वाले गाँवों का दस्तावेजीकरण करता है।
- यह ढाँचा मूर्त और अमूर्त विरासत दोनों को समाहित करता है। साथ ही, गाँव स्तर की विशिष्टता को भी उजागर करता है।
- 2026 तक, देश भर में एमजीएमडी के तहत लगभग 6.23 लाख गाँवों का सांस्कृतिक मानचित्रण किया जा चुका है।
- इस व्यापक लक्ष्य में लगभग 6.38 लाख गाँव शामिल हैं, जो एक विशाल डिजिटल दस्तावेजीकरण प्रयास का हिस्सा है।

शासन, सहभागिता और विकास संबंध

- संस्कृति मंत्रालय, आँकड़ों के संकलन और सत्यापन के लिए पंचायती राज मंत्रालय के साथ सहयोग करता है।
- ग्रामसभाएँ और पंचायती राज संस्थाएँ (PRIs) समुदायों को सांस्कृतिक पहचान का दस्तावेजीकरण करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।
- क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से हितधारकों को व्यवस्थित प्रलेखन, डिजिटल संरक्षण और सामुदायिक भागीदारी में प्रशिक्षित किया जाता है।
- सुलभ सांस्कृतिक अभिलेख ग्रामीण पर्यटन, शिक्षा और स्थानीय परंपराओं के प्रति जनता की सराहना को बढ़ावा देते हैं।
- एमजीएमडी प्रौद्योगिकी को विरासत से जोड़ता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि गाँव भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य में सक्रिय योगदानकर्त्ता बने रहें।

निष्कर्ष

मेरा गाँव मेरी धरोहर (MGMD) यह दर्शाता है कि प्रौद्योगिकी किस प्रकार सांस्कृतिक स्मृति को भविष्योन्मुखी विकास से जोड़ सकती है। यह गाँवों को परंपराओं का केंद्र और भारत के बदलते सांस्कृतिक परिदृश्य में योगदानकर्त्ता बने रहने में मदद करता है।

12. बस्तर पंडुम : सांस्कृतिक अभिकथन और नक्सल-मुक्त मार्ग का सुदृढ़ीकरण

परिचय

बस्तर पंडुम, संघर्ष से जुड़ी असुरक्षा से बस्तर की सांस्कृतिक दृढ़ता, विकास और सामुदायिक आत्मविश्वास की ओर बदलाव को दर्शाता है। यह जनजातीय विरासत को शांति, सहभागिता, गरिमा और समावेशी शासन के आधार के रूप में प्रस्तुत करता है।

सांस्कृतिक अभिकथन और जमीनी स्तर पर व्यापक प्रभाव

- बस्तर पंडुम जनजातीय पहचान को वास्तविक ऋतुओं, फसलों और सामुदायिक परंपराओं के माध्यम से व्यक्त करता है, न कि मंच आधारित प्रदर्शनों के माध्यम से।
- 2026 का महोत्सव 5 जनवरी से 9 फरवरी तक चला, जिसमें 54,745 प्रतिभागियों ने भाग लिया और समापन समारोह में 55,000 से अधिक लोगों ने अपनी भागीदारी की।
- ये प्रतियोगिताएँ बस्तर के सात जिलों में 32 ब्लॉक मुख्यालयों और 1,885 ग्राम पंचायतों तक पहुँचीं।
- वर्ष 2025 के संस्करण में 47,000 कलाकारों ने भाग लिया और इसे गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया।
- 7 से 12 विषयों तक विस्तार के दौरान नृत्य, नाटक, वेशभूषा, भोजन, साहित्य और औषधीय ज्ञान को प्रलेखित किया गया।

विकास, सुरक्षा और शासन अभिसरण

- नरेंद्र मोदी, अमित शाह और विष्णु देव साय ने बस्तर पंडुम की राष्ट्रीय पहचान को बढ़ाया।
- नेताओं ने बस्तर में बम, गोलीबारी एवं इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (IED) के धमाकों से हटकर उत्सव का माहौल गढ़ा।
- लगभग 40 साल पहले बंद हुए स्कूल फिर से खुल गए; 5 किलोमीटर के दायरे में सड़कें, टावर और डाक बैंकिंग का विस्तार हुआ।
- मुफ्त चावल, गैस सिलेंडर, नल का पानी और 3,100 रुपए के न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) ने घरेलू-कृषि कल्याण का समर्थन किया।
- 3,500 करोड़ रुपये की रावघाट-जगदलपुर रेल परियोजना, 36 करोड़ रुपये की इंद्रावती सिंचाई परियोजना और 118 एकड़ के हब ने रोजगार का विस्तार किया।
- 90,000 युवाओं को लक्षित करने वाली कौशल पहलों ने पुनर्वास, गरिमा और मुख्यधारा समाज में पुनः एकीकरण में सहयोग प्रदान किया।

मान्यता, आजीविका और शांति सुदृढ़ीकरण

- जनजातीय गौरव दिवस, बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती और प्रधानमंत्री द्वारा दी गई मान्यता ने प्रतीकात्मक समावेशन को मजबूत किया।
- पंडित राम मंडावी, हेमचंद मांझी, अजय कुमार मंडावी और भूधरी दाती को पद्म पुरस्कार मिला।
- कलाकारों के लिए मंच, जनजातीय उत्पादों की ब्रांडिंग और विपणन, वन उत्पादों, हस्तशिल्प व आजीविका को आपस में जोड़ते हैं।

- पर्यावरण-सांस्कृतिक पर्यटन के लिए बस्तर में एडवेंचर टूरिज्म, होमस्टे, कैनोपी वॉक और ग्लास ब्रिज जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।
- 1,885 ग्राम में बड़े पैमाने पर भागीदारी पंचायतों ने बस्तर पंडुम को एक अनुकरणीय शांति-विकास मॉडल बना दिया है।

निष्कर्ष

बस्तर पंडुम यह दर्शाता है कि स्थायी शांति के लिए सांस्कृतिक मान्यता, आर्थिक समावेशन और सहभागी शासन आवश्यक हैं। इसका मॉडल परंपरा को विकास के साथ एकीकृत करता है जिससे जनजातीय पहचान को आत्मविश्वास, आजीविका और क्षेत्रीय स्थिरता में परिवर्तित किया जा सकता है।

13. जीवंत कैनवस : भारत की जनजातीय कला परंपराओं का उत्सव

परिचय

भारत की जनजातीय कला परंपराएँ जीवंत दृश्य भाषाओं के माध्यम से सांस्कृतिक स्मृति, पारिस्थितिक संबंधों और सामुदायिक पहचान को संरक्षित करती हैं। ट्राइब्स आर्ट फेस्ट 2026 ने दिखाया कि किस प्रकार मान्यता प्राप्त करना प्रथाओं को बनाए रखने के साथ-साथ समकालीन रचनात्मक भविष्य को सक्षम बना सकता है।

ट्राइब्स आर्ट फेस्ट और लिविंग हेरिटेज

- ट्राइब्स आर्ट फेस्ट 2026 का आयोजन 3 से 13 मार्च तक त्रावणकोर पैलेस, नई दिल्ली में हुआ।
- जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा इसका आयोजन नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट (NGMA) और FICCI के सहयोग से किया गया था।
- इसमें भारत भर से 75 से अधिक आदिवासी कलाकार और 1,000 से अधिक कलाकृतियाँ शामिल किए गए।
- इस महोत्सव में प्रदर्शनों और कहानी सुनाने के सत्रों के माध्यम से 30 से अधिक आदिवासी कला परंपराओं का प्रतिनिधित्व किया गया।
- भारतीय जनजातीय कला में चित्रकला, धातु शिल्प, लकड़ी की नक्काशी, वस्त्र, मिट्टी के बर्तन और शरीर कला शामिल हैं।
- खास तौर पर तैयार किए गए वॉकथ्रू व मेंटरशिप से 100 से ज़्यादा आदिवासी प्रतिभागियों को विविध रचनात्मक पद्धतियों से परिचित होने का मौका मिला।

वारली, मुखौटे और गोंड दृश्य परंपराएँ

- वारली चित्रकला को 2014 में भौगोलिक संकेतक (GI) का दर्जा प्राप्त हुआ, जिससे इसके अधिकृत वाणिज्यिक उपयोग को संरक्षण मिला।
- मधुकर रामभाऊ वाडू ने आठ साल की उम्र में वारली कला शुरू की और लगभग पाँच दशकों तक चावल के पेस्ट से बने रंगों का इस्तेमाल किया।
- वारली कला विधाओं में खेती, अनुष्ठानों, उत्सवों और तारपा नृत्य को दर्शाने के लिए वृत्त, त्रिभुज व वर्ग का उपयोग किया जाता है।
- अलीपुरद्वार की रहने वाली 64 वर्षीय शांति राम रभा ने लकड़ी, बांस, मिट्टी एवं लौकी का उपयोग करके रभा-तमांग मुखौटों को संरक्षित किया।
- गोंड कला में जानवरों, वृक्षों और मानव आकृतियों को सजीव बनाने के लिए प्राकृतिक रंगों, बिंदुओं व रेखाओं का उपयोग किया जाता है।

कलाकार, आदान-प्रदान और रचनात्मक निरंतरता

- भोपाल के गोंड-प्रधान कलाकार जापानी श्याम हर्ली, समकालीन कथाओं के माध्यम से जंघर सिंह श्याम की विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं।
- भारत की सबसे प्राचीन परंपराओं में से एक, भील चित्रकला में जंगलों, जानवरों और आध्यात्मिक कथाओं के लिए बिंदुओं का उपयोग किया जाता है।
- झाबुआ के राम सिंह भावोर ने घर की दीवारों पर भील कला सीखी और बाद में क्षेत्रीय स्तर पर तकनीकों का आदान-प्रदान किया।
- सार्वजनिक उत्सव आदिवासी कलाकारों को अपनी कलाकृतियाँ बेचने, पहचान हासिल करने और युवा सदस्यों को प्रेरित करने में मदद करते हैं।

निष्कर्ष

जनजातीय कला एक जीवंत कला बनी हुई है, न कि संग्रहालयों में रखी जाने वाली विरासत, क्योंकि कलाकार सामुदायिक ज्ञान की पुनर्व्याख्या करते हैं। सार्वजनिक मान्यता प्रकृति से जुड़ी स्मृति को संरक्षित करती है और साथ ही भारत के समकालीन रचनात्मक परिदृश्य को आकार देती है।